ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। बेसमझों को समझानी देनी होती है। जब तक पूरा समझदार बन जावें। अभी तुम्हारे पास प्रदर्शनी वा म्युज़ियम में आते हैं, क्योंकि दलदल अथवा दुर्गन में फंसे हुये हैं ना। बुलाते भी हैं पतितों को आकर पावन बनाओ। और विश्व में शान्ति भी चाहते हैं। अर्थात नई सतयुगी राजाई, नई दुनिया ही चाहते हैं। बच्चे जानते हैं नई दुनिया को ही पुरानी होती है। पहले2 यहां से जो आत्मायें आती हैं वह पवित्र है। झाड़ से सारा मालूम पड़ जाता है। पिछाड़ी में जो नये2 पत्ते निकलते हैं, देखने में बड़े ही सुन्दर होते हैं। पुराने पत्तों से सुन्दर तो जरूर हैं। अनेक धर्मों में आते रहते हैं। उनका कुछ ज्ञान रहता है। क्योंकि पहले2 उन्हों को सुख देखना है। झाड़ तो जड़-जड़ी भूत हो गया है। झाड़ पहले तो छोटा होता है पीछे एडीशन होतेहोते बड़ा हो जाता है। यह भी समझाया है कि झाड़ का फाउन्डेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। झाड़ बहुत ही पुराना हो गया है। फाउन्डेशन का नाम-निशान नहीं। सिर्फ चित्र है। और धर्मों की ऐसी गति नहीं होती है। बुलाते हैं इस दुर्गन से निकालो। बाप भी समझाते हैं बच्चे तुम दलदल में फंस गये हो। तो जरूर दुःखी होंगे। निकलने का रास्ता ही नहीं जानते। कहां यह वेश्यालय की दलदल, बदबुयें। कहां शिवालय की खुशबुयें, बगीचे। यह हैं कांटों का जंगल। तो बुलाते हैं बाबा इसको आकर चेंज करो। बाबा बाबा कहते रहेंगे। सभी आत्मायें बाप को बुलाती है। क्योंकि दलदल में पड़े हैं ना। यहां भी बहुत हैं भल सुनते भी हैं परन्तु दलदल में पड़े हैं। राजाई स्थापन होती है इसमें नम्बरवार होंगे ना। तो जब प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम कोई आते हैं तो प्यार से उनको कहना है भले पधारो। जैसे शादी होती है तो निमंत्रण दे बुलाया जाता है ना। खुशी से आते हैं। अभी तुम सभी बरबादी में हो। बाप आकर आबादी में ले जाते हैं। तो जब कोई आये उन से पूछना चाहिए तुम क्या चाहते हो। दिल में क्या विचार कर आये हो। बोर्ड पर देखो क्या लिखा हुआ है गेट वे टु हैविन। तो हैविन में जरूर विश्व में शान्ति होगी। हेल में विश्व में अशान्ति होगी। तुम क्या चाहते हो? विश्व में शान्ति के लिए ही बुलाते हैं। पतितों को पावन बनाने वाले आओ। क्योंकि दुःख बहुत आ गया है। इसलिए जरूरी पुकारते हैं। बापको तो हंसी आती है यह बिचारे दुर्गन में फंसे पड़े हैं। पुकारते ही आते हैं। दुर्गन में फंसते जाते और पुकारते आते। निकलने की कोशिश करते हैं तो और ही अन्दर फंसते जाते हैं। नाटक देखने में खुशी होते हैं ना। बाप को भी खुशी होती है। मुझे ड्रामा के प्लैन अनुसार बुलाते हैं। उन्हों की बुधि में खुशी नहीं है। तुम बच्चे ही जानते हो कि बाबा आया हुआ है। हमको दलदल से निकाल रहे हैं। बाप बहुत ही सहज बात बताते हैं। यह है ही सहजज्ञान और सहज योग। टीचर से योग और पढ़ाई। इसलिए इनको पाठशाला भी कहा जाता है। यह तो झूठी पाठशालायें हैं भक्ति मार्ग की। यह भी खेल है। बाबा जानते हैं इस चक्र को फिरना ही है। मुझे आकर सभी को ले जाना है। हम बाप जानते हैं हम बहुत ही बार आये हैं। सभी को दलदल से निकालने। जो कल्प पहले निकले थे वही निकलेंगे। ज़रा भी फर्क नहीं हो सकता। ड्रामा है ना। तुम्हारी आत्मा पतित बन गई है। यहां पावन आत्मा तो कोई हो न सके। इस समय जब कि मैं आता हूं तो ऊपर से जो आत्मायें आती हैं थोड़ी महिमा निकली और खलास। जैसे मच्छड़ जन्मे और मरे। पिछाड़ी में आते हैं ना। पार्ट ही बहुत थोड़ा है। इतनी महिमा है नहीं। बाप खुद समझाते हैं मुझे कल्प2 बुलाते हैं। यह सारी पतित दुनिया अभी बदली भी होनी ही है। तो माया का ऑपोजिशन भी है। आधा कल्प है रावण का राज्य। मैं सर्वशक्तिवान आलमाईटी अथॉरटी हूं। वह भी कम थोड़े ही है। भक्ति का कितना ऑपोजिशन है। बाप आकर सभी वेदों-शास्त्रों आदि को खन्डन कर देते हैं। कितनी सामग्री है भक्ति की। अभी तुम बच्चे समझते हो कैसे भक्ति करते2 नीचे ही उतरते आये हैं। चढ़ने का तो है नहीं। उतरने में कितना समय लग जाता है। बाप को बुलाते हैं हमारी चढ़ती कला करो। बाप तो एक ही

वार आवेंगे ना। आते भी वानप्रस्त अवस्था में हैं तो भुजीवा। इनके बाद ही फिर यह रसम भक्ति मार्ग में चल है। 60 वर्ष में वानप्रस्त अवस्था होती है। कहते हैं ना साठ लगे लाठ। दुनियाको लाठ लगाते चलो वानप्रस्त में। आगे वानप्रस्त के बहुत आश्रम होते थे। परन्तु उनका अर्थ तो कुछ भी समझते नहीं। बस, बुढ़ा हुआ तो गुरु करना चाहिए। गुरु करते हैं मुक्ति में जाने लिए। गंगा स्नान आदि बहुत करते हैं। उन्नति तो कुछ भी होती नहीं। गिरते ही आते हैं। तुम्हारे कहने से गुसा भी आवेगा। यह विघ्न तो पड़ेंगे। नथींग न्यू। कल्प2 होता ही है। खुद पुकारते हैं तो आत्माओं को पवित्र तो बनाना पड़े ना। सन्यासी तो कह देते आत्मा निर्लेप है। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुधि बन गई है। यह सभी जंगले के कांटे हैं ना। मुसलमान लोग भी खुदाई बगीचे का साक्षात्कार करते हैं ना। आगे एक था, कहता था हम खुदाई बगीचे में गया। खुदा ने हमको फूल दिया। यह भी ड्रामा में नूंध है। जो भी पास्ट हुआ बाप कहते हैं ड्रामा। अभी तुम नज़दीक आते जाते हो। बाप जानते हैं जो भी सब आत्माएं हैं सब को वापस ले जाना है। हिसाब-किताब चुकुत होना है। फिर नया ड्रामा शुरु होगा। यह भी समझाया है आत्मा कितनी छोटी और अविनाशी है। ड्रामा भी अविनाशी है। बेहद के बाप जानते हैं अभी सारी दुनियाके आत्माओं को वापस जाना है। कितने ढेर आत्माएं हैं। सभी अपने2 स्टेशन में चले जावेंगे। फिर आकर पार्ट बजाना है। जैसे नम्बरवार आये हैं अब जाना है। बच्चे जानते हैं इतने ढेर आत्माओं को बाबा कैसे ले जावेंगे। हमको कैसे पढ़ाते हैं। बाप बिगर तो कोई राजयोग सिखा नहीं सकता। ऐसा हमारा बाबा है। लव जाता है ना। कितना बड़ा बाबा है। कितना बड़ा काम करते हैं, कैसे सारे विश्व को गोल्डेन एज में ले जाते हैं। बाबा ने अनेक बार यह कार्य किया है। कमाल है बाबा की। कितना हमको ऊंच बनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तेरे सब दुःख दूर हो जावेंगे। इनकी दवाई एक ही है। दूसरी कोई दवाई है नहीं जो चेंज की जाये। पतित-पावन भी मुझे ही कहते हैं। मैं आकर समझाता हूं तुम पतित बने हो जरूर। यह दुनिया ही पतित है। यथा राजा-रानी ... सभी जड़-जड़ीभूत अवस्था को पाये हुये हैं। ड्रामा अनुसार दुनिया पुरानी होनी ही है। पतित दुनिया को कांटों का जंगल कहा जाता है। अभी तुम बच्चे ड्रामा को तो जान गये हो। सभी का पार्ट अलग2 है। नम्बरवार तो होते ही हैं। राजाई में भी ऊंच पद पाने लिये तुमको पुरुषार्थ कराया जाता है। यह नालेज ही राजयोग की है। टीचर तो जरूर चाहिए ना जिससे योग लगावे। पहले बाप का बच्चा बनते हैं फिर पढ़ते हैं। फिर मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाते हैं। तुमको बाप, टीचर, गुरु तीनों ही मिले हैं। यह भी बच्चे जानते हैं बाप को याद करने सिवाय हम पुर तो बन नहीं सकेंगे। जन्म-जन्मान्तर का सर पर बोझा है। कल्प पहले भी बाबा ने ऐसे कहा था कि मामेकं याद करो। पवित्र होकर ही जाना है। नहीं तो फिरसज़ा खाकर ही जाना होगा। पावन होने का युक्ति बताता हूं तो पुरुषार्थ करना है ना। दिन प्रति दिन गुह्य बातें सुनाते रहते हैं। आत्मा भी कितनी छोटी बिन्दी है। फिर कहते हैं अपने को आत्मा समझो। तुम्हारा बाप भी ऐसा ही बिन्दी है। खुद तो राजाई नहीं करते हैं। तुमको दल-दल से निकालने वाला कोई तो चाहिए ना। सो तो जरूर एक ही होगा। 10-20 तो नहीं हो सकते। भूल-भुलैयां में भी एक खड़ा रहता है रास्ता बताने लिए। भगवान को भी यहां आकर रास्ता बताना है। तुमको थोड़े ही कहां जाना है। पहाड़ी थोड़े ही हैं जो कोई कहां से कोई कहां से जावेगा। वह तो समझते हैं सभी शास्त्रों से भगवान मिलने का रास्ता मिलता है। परन्तु वह सब पढ़ते2 आत्मा तो पावन बनी नहीं है। पतित आत्मा कैसे हुई। पतित आत्मा कैसे जावेगी। अभी बच्चे समझते हैं बराबर बाबा आया हुआ है। देखते भी हैं यह आत्मा अपने तख्त पर बैठी है। अकाल मूर्त आत्मा का यह तख़्त है। सिक्ख लोग अकाल तख़्त कहते हैं ना। वहां जाके बैठते हैं। वास्तव में अकाल आत्मा है जो तख़्त पर बैठती है। मनुष्यों को तो जो आता कह देते हैं। अर्थ कुछ नहीं

समझते। तुम अर्थ समझ सकते हो। बाप तो सभी का एक ही है। बाप से ही बच्चों को वर्सा मिलता है। सतयुग में अभी बाप से वर्सा मिलता है। वहां एडाप्शन की बात नहीं। यहां बिमारियां आद होती हैं तो बच्चा नहीं पैदा होता है। फिर एडाप्ट करते हैं। वहां यह बातें नहीं होती। कायदे सिरे बच्चे को वर्सा मिलना ही है। यह हैं बेहद का बाबा। बाप अर्थात जिस से जन्म मिला। यहां तुमको जन्म मिला है ना। यह हैं भरजीवा। इस बाप के तुम बनेतो उन से बुधि योग तोड़ इन से जोड़ना होता है। धनवान बाप का बच्चा कब गरीब की एडाप्शन थोड़े ही कबुल करेगा। यहां बच्चे जानते हैं बाप के बनने से विश्व की बादशाही मिलती है तो जरूर बाप पावन भी बनावेंगे। बुलाते भी इसलिए हैं। पावनदुनिया में सर्वसुखी राजाई। बाकी वह है शान्तिधाम। उसका कोई बर्णन नहीं है। कर्मेन्द्रियां ही नहीं जो पार्ट बजे। आत्मायें तैयार रहती हैं हमारा टाईम आवे तो जाकर पार्ट बजावें। तो अभी बाप कहते हैं सभी मनुष्य मात्र को पवित्र बन जाना है। पतित तो कोई जा नहीं सकते। हम सभी को ले जावेंगे। क्योंकि पार्ट चलना हैं सो आगे चल कर देखेंगे। मूल बात हैं रास्ता बताना। अंधों की लाठी बनना है। तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। ऐसे नहीं कि यहां कोई तीसरा नेत्र निकल जाता है। यह बुधि का नेत्र है। आत्मा को ज्ञान मिला है। संगम पर तुम पढ़ते हो और पद नई दुनिया में पाते हो। बाकी सभी आत्मायें चली जावेंगी वापस मुक्ति धाम। समझाने की तुम कोशिश करते रहते हो। विलायत से आते रहते हैं हो सकता हैकोई समझ ले कि भगवान आया है राजयोग सिखलाने तो आवाज़ फैल जावेगा। विवेक कहते हैं ढेर के ढेर आवेंगे। क्यू लग जावेगी। क्या होता हैं सो तो आगे चल कर देखेंगे। बाबा भी कहां जंगल में चले। कुछ मनुष्यों की समझ आ जाये फिर चलना भी अच्छा है। अभी तो अच्छा नहीं लगता है। दिन प्रति दिन हंगामा जास्ती होता जाता है। कामेषु, क्रोधेषु हैं ना। कहेंगे यह वही दादा हैं लगाओ पत्थर। बाबा ने भी कहा हैं अभी बाहर जाकर क्या करेंगे। फादर सोज सन। बच्चों का काम हैं औरों को समझाना। बाबाने कहा भी उस समय हैं जब कि ईन्द्रा गांधी के नाक को चोट लगी। कहां तुम्हारा नाक खराब होगा तो हमको थोड़े ही कुछ है। तो हम ने कहा अच्छा ठीक है। जनावर लोग हैं ना। आग लगाते रहते, मारते रहते हैं। मोटर में भी कितने एक्सीडेन्ट हो जाते हैं। इसलिए मोटर का तो नाम भी न लो। तुम कहां बाहर जाओ ही नहीं। राय देते हैं अभी बाहर निकलना अच्छा नहीं है। तकलीफ तुमको ही होगी। तो अभी बच्चों को यह बेहद का धंधा करना है। सभी को पैगाम देना है। बोलो हमको शान्ति चाहिए तो इस चित्र के सामने कर दो। इनके राज्य में विश्व में शान्ति थी। अभी तो अशान्ति ही है। वहां तो रावण राज्य हो नहीं तो विकार की बात हो कैसे सकती। यह तो भक्ति मार्ग के शास्त्रों में बकवाद लिखी हैं। तो अभी हम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। विश्व में शान्ति, तो जरूर कोई होना चाहिए ना। आकाश तत्व खाली थोड़े ही होती है। आकाश में विश्व है। अभी तो बहुत बड़ी हैं उस समय छोटी थी। पवित्रता सुख-शान्ति सब था। अभी इस रामराज्य में चलना है तो बैठो हम तुमको समझावें। शान्तिधाम तो हैं मूलवतन, जहां आत्मायें रहती हैं फिर विश्व में शान्ति-सुख हैं सतयुग में। कितना सहज है। बाप की नज़र तो बेहद में जाती है। इतने सभी आत्माओं को ले जाना है। चिल्लाते रहते हैं। साहुकार नहीं चिल्लाते हैं तो वहां उनको पाई-पैसे का पद मिल जावेगा। शंकराचार्य क्या बनेंगे। पिछाड़ी में तमोप्रधान समय में ही आवेंगे। जो अच्छा पहले नम्बर वाला शंकराचार्य होगा वह थोड़े ही भक्ति करता होगा। यह तो भक्ति करते हैं। पहले गवर्मेन्ट सर्वेन्ट था अभी गद्दी मिली हुई है। तुम लिख सकते होश्री2, 108 जगद्गुरु, पूज्य, फिर पूजा कैसे करते हो। 100-200 चिट्ठियां आनी चाहिए। कल्याण तो करना है ना। नई दुनिया में सब पूज्य होते हैं। यहां हैं पुजारी। पुजारी दुर्गति को, पूज्य सदगति को पाते हैं। युक्ति से चुनरी पहननी चाहिए। इसमें डरने की बात नहीं। कोई से पूछ सकते होतुमको क्या चाहिए? तुम अथार्टी हो ना। अच्छा गुडमार्निंग।

****